लोकतंत्र की बहुलवादी धारणा।
(Pluralist view of Democracy)

WWW.CONNECTSCHOOL.COM
PAGE NO.
DATE :

Dr. Akhlakh Ahmad
(Asst. Prof.) D.K. College
Dumraon

जहाँ उदारवादी लोकतंत्र व्यक्ति, व्यक्ति की स्वतंत्रता और उसके अधिकारों की रक्षा के लिए समुचित व्यवस्था पर आधारित है। वहाँ बहुलवादी लोकतंत्र समस्त व्यवस्था में व्यक्तियों द्वारा सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में निर्मित विविध समुदाय अपनी प्रभावपूर्ण स्थिति बनाए रखते हैं।

अमेरिका तथा पश्चिमी-यूरोप की शासन-व्यवस्था को बहुलवादी लोकतंत्र के नाम से पुकारा जाता है।* मोरिस दुवर्जर, रॉबर्ट ए० डेल, लोवेस्टीन और लिपसेट आदि विद्वानों ने बहुलवादी लोकतंत्र की अवधारणा का प्रतिपादन किया है। बहुलवादी लोकतंत्र की मूल धारणा सत्ता का विकेन्द्रीकरण है।

* दुवर्जर ने इसे "निर्णय के विभिन्न केन्द्रों का होना" कहा है। रॉबर्ट ए० डेल ने इसे "बहुतंत्र" (Polyarchy) * जबकि लोवेस्टीन ने "Polycracy" कहा है। * लिपसेट ने "Political man" में कहा है - निम्न वर्गों का राजनीति में योगदान, मतदान पर सामाजिक परिस्थितियों का प्रभाव, राजनीति पर बुद्धिजीवियों का प्रभाव तथा मजदूर संघों से सम्बद्ध राजनीतिक गतिविधियाँ।

यह एक ऐसी लोकतंत्र व्यवस्था है जिसमें अनेक दल, दबाव-गुट तथा हित समूह राजनीतिक क्रियाओं को प्रभावित करने में प्रयत्नशील रहते हैं।

बहुलवादी लोकतंत्र की प्रमुख बातें :-

(i) इसमें प्रत्येक व्यक्ति भागीदार होता है।

(ii) शासन की शक्तियों को साधारणत: तीन भागों में - (a) विधायी (b) कार्यकारी तथा (c) न्यायिक शक्ति में बाँटा गया है।

(iii) शक्तियों को विभिन्न क्षेत्रीय सरकारों में विभाजित कर दिया जाता है। संघीय शासन व्यवस्था में शासन की शक्तियाँ Centre & State में वितरित कर दी गयी है वहीं एकात्मक शासन व्यवस्था में शासन की शक्तियाँ सिर्फ Centre में ही स्थित रहती हैं। As- England, France.

(iv) Independent Judiciary

लोकतंत्र की मार्क्सवादी अवधारणा (Karl marx & Lenin)
(Marxist view of Democracy)

'लोकतंत्र की मार्क्सवादी अवधारणा' के प्रतिपादकों का विचार है कि 'शास्त्रीय लोकतंत्र' या 'उदार लोकतंत्र' की शासन व्यवस्था लोकतंत्र का सिर्फ दिखावा मात्र है। मार्क्सवादी अवधारणा के अनुसार पश्चिमी लोकतंत्रों में शासन पर सिर्फ साधन- संपन्न वर्ग के नियंत्रण होने के चलते शासन तंत्र का प्रयोग इसी वर्ग के हितों के पोषण के लिए किया जाता है। मार्क्स का मानना है कि जिस राज्य में शासन-व्यवस्था का संचालन सिर्फ साधन- संपन्न वर्ग के हित के रूप में किया जाता है, वह लोकतांत्रिक नहीं है। सही अर्थ में 'लोकतांत्रिक शासन-व्यवस्था' उस शासन- तंत्र को कहा जाना चाहिए, जहाँ इसका प्रयोग सभी वर्गों के कल्याण और वर्गरहित समाज की स्थापना के लिए होता है।

लोकतंत्र की मार्क्सवादी अवधारणा की सफलता की आवश्यक शर्तें :-

इसका मानना है कि राजनीतिक शक्ति आर्थिक शक्ति की दासी होती है। सच्चा लोकतंत्र तभी स्थापित हो सकता है, जब आर्थिक स्थिति संपूर्ण समाज में निहित हो। इसकी सफलता के लिए तीन शर्तों को बताया है :-

(i) उत्पादन और वितरण के साधनों पर सार्वजनिक स्वामित्व
(ii) संपत्ति का समान वितरण और सभी व्यक्तियों को आर्थिक सुर-
(iii) साम्यवादी दल का सत्ता पर एकाधिकार।

मार्क्सवाद के अनुसार लोकतंत्र का मुख्य उद्देश्य यह है कि शासन जनता के हित में कार्य करे, जनसाधारण का शोषण न हो; यह तभी संभव है जब समाज धनवान और निर्धन वर्गों (haves, haves nots) में बँटा न रहे। मार्क्सवाद पूंजीवाद को लोकतंत्र का सच्चा शत्रु मानता है। पूंजीवाद में बुर्जुआ वर्ग सर्वहारा वर्ग का शोषण करता है। इस शोषण का अंत करने के लिए कामगार वर्ग को पूंजीवाद के विरुद्ध क्रांति करके सर्वहारा का अधिनायकतंत्र स्थापित करना चाहिए ताकि राज्यहीन, वर्गहीन समाज का उदय हो सके। इसमें सत्ता किसी एक व्यक्ति या गुट के हाथों में नहीं रहेगी बल्कि एक विशाल कामगार वर्ग के हाथों में रहेगी। इसमें उत्पादन के साधनों पर सार्वजनिक स्वामित्व हो जाएगा। जनता को रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास प्रदान किया जाएगा और विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी का विकास किया जाएगा ताकि मानव का अपार बढ़कर पूर्ण सामाजिक संतुष्टि का लक्ष्य प्राप्त किया जा सके।

Scanned with CamScanner